सृजन,
शक्ति व साधना
ही स्त्री की
आराधना

समर्थ नारी गौरव

पूजा राठौड़

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

सृजन, शक्ति व साधना ही स्त्री की आराधना

पूजा दीपक राठौड़

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-13-4

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- पूजा दीपक राठौड़ 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY POOJA DEEPAK RATHOD

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

सृजन, शक्ति व साधना ही स्त्री की आराधना

स्त्री का जीवन अमूल्य है। स्त्री प्रेम, साहस और ममता का दूसरा रूप है। स्त्री महज परिवार की संचालिका ही नही वरण वह जगत जननी है।

स्त्री के बिना सृष्टि की कल्पना नही की जा सकती। आज की नारी ने हर क्षेत्र मे अपना मुकाम हासिल कर लिया है, जिसकी पहले लोग कल्पना भी नही कर सकते थे। हर स्त्री अपने काम और घर के बीच सामंजस्य बना कर चलती है जिसमे वह अपने काम के साथ-साथ अपने बच्चो का पालन पोषण कर उनका और देश का भविष्य संवारती हैं।

स्त्री एक ही जीवन मे दो जन्म बिताती है। पहला जन्म उसका मायका जहाँ वह अपना बचपन बिताती है

अपने माँ-बाप के दिए संस्कार, शिक्षा तथा पालन-पोषण के साथ बड़ी होती है। स्त्री का दूसरा जन्म उसका ससुराल होता है जहाँ वह अपना बचपन छोड़कर नए जीवन मे प्रवेश करती है। हर स्त्री के जीवन में इन दोनो जन्मो के बीच तालमेल बिठाना बहुत जरूरी है। जो संस्कार बचपन से बेटी को दिए जाते है, वही उसकी असली पूंजी होती है। यही संस्कार उसे नए जीवन मे अपने आपको ढालने मे मदद करते हैं।

सृजन का दूसरा नाम ही स्त्री है स्त्री ही सृजनकर्ता है किंतु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि सृजन करने वाली स्त्री ही खुद अपनी कोख उजाड़ने पर मजबूर कर दी जाती है। हमारे समाज मे फैली अनेक कुरीतियो में से दहेज प्रथा इसका प्रमुख कारण है। जिसमे एक लड़की के मात-पिता को दहेज के रूप में एक बड़ी राशि देनी पड़ती हैं।

जिसकी वजह से अपने देश मे कई माता-पिता लड़की को जन्म देना नही चाहते। हमारे देश में लडके को ही आज भी एक परिवार का भविष्य माना जाता हैं इसलिए लड़के को जन्म देने के लिए परिवार की नई दुल्हन पर एक तनाव होता है। समाज मे फैली अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी के कारण भी बच्चियों को बोझ माना जाता हैं। जिसकी वजह से कन्या भ्रूण हत्या होती है।हर युग मे स्त्री को अबला, दुर्बल तथा भोग की वस्तु समझा गया हैं।

किसी ने बहुत खूब कहा है

एक तपती दोपहर है नारियों की जिन्दगी,
एक पथरीली डगर है नारियों की जिन्दगी।
चाहे हो अग्नि परीक्षा,चाहे चौसठ की बिसात,
हर सदी पर दाव पर है नारियो कि जिन्दगी।

संसार मे संस्कार का बीज बोने वाली स्त्री कोयू पतित कर समाज स्वयं का पतन कर रहा है! क्योंकि वह स्वयं की जड़ो के साथ ही सृजनकर्ता की जड़े भी काट रहा है। स्त्री ही केवल सृजनकर्ता है और यही उसका दैवीय गुण है क्योंना इसे समय रहते सहेजा जाए। हमे ही मिलकर समाज को यह समझाना होगा स्त्री न हो तो यह दुनिया ही नही बल्कि पूरी सृष्टि ही रुक जाएगी।

सृजन से स्त्री का गहरा नाता है वो माँ बनकर संसार रचती है, बच्चे में वह संस्कार रचती है, रसोई में स्वाद रचती हैं, जो रंग और ब्रश मिल जाये तो ख्वाब रचती है, जो कलम उठा ले तो साहित्य रचती हैं।

घर-परिवार, चूल्हा-चौका, साज-सज्जा स्त्री के जीवन का अभिन्न अंग हैं। परंतु आज की स्त्री की दुनिया

यही तक सीमित नही है। शिक्षा, राजनीति हो या विज्ञान हर क्षेत्र मे स्त्री ने अपनी सफलता का परचम गाड़ा हैं।

हमे लड़कियों को बोझ न समझ कर उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना चाहिए। गांधी जी कहते थे जब पुरुष वर्ग शिक्षित होगा तो केवल उसी समुदाय का विकास होगा किन्तु जब एक स्त्री शिक्षित होगी तो पूरे देश का विकास होगा।

यहाँ मै खुद अपना उदाहरण देना चाहूंगी। हम तीन बहने है घर की बड़ी लड़की होने कर कारण मैने बचपन से ही माँ को किसी न किसी रिश्तेदार द्वारा लड़कियो का बोझ होने का आभास कराते देखा था। लेकिन हमारी खुशकिस्मती थी कि हमने गुजराती परिवार मे जन्म लिया जहाँ दहेज देने जैसी कुप्रथा नही हैं। हम बहनों को हमारे माँ-बाप ने शहर के सबसे अच्छे स्कूल शिक्षा

दिलाई। वही हमारे घर के आस-पास कुछ मारवाड़ी परिवार भी रहते थे। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होने के बावजूद भी उनके बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते थे, शायद उन्हें लगता पढ़ा लिखा कर क्या करना हैं अच्छे घर में ब्याह करने के लिए अच्छा दहेज ही देना होगा।

काश हर माँ-बाप शिक्षा का महत्व समझे और बेटो के साथ-साथ बेटियों को भी पढ़ने के लिए बढ़ावा दे। मुझे आज भी याद है मैने अपना ग्रेजुएशन पूरा किया तब मुझे मेरे चाचाजी अपनी पहचान की नर्सरी स्कूल में ट्रेनिंग के लिए लेकर गए। वहाँ स्कूल वालो ने कहने लगे की लड़कियों को ट्रेनिंग देते है फिर एक-दो साल मे वे शादी कर करके ससुराल चली जाती है। तो इस पर चाचा जी ने उन्हें जो कहा वह मैं अपनी जिंदगी में आज तक नही भूली उन्होंने कहा- अरे अभी कहा इनके पिताजी

बेटियों की शादी करने की आर्थिक स्थिति में है जो तीन तीन बेटियों की शादी करेंगे ।फिर मैंने भी वहा ट्रेनिग करने से मना कर दिया और एक कोचिंग क्लास में पढ़ाने लगी और अपनी एक अलग पहचान बनाई। आज जब हमारी शादी अच्छे खान-दान में हो गई है, दोनो छोटी बहन अमेरिका में सेटल है और अपने पैरों पर खड़ी है। तो रिश्तेदारो का मुंह अपने आप बंद हो गया। मेरे कहने का मतलब है हम स्त्रियों को अपनी काबिलियत दिखाने कर लिए किसी के उपकार की जरूरत नही होती। ईश्वर ने सभी को कुछ न कुछकाबिलियत दी हैं। जरूरत हैं तो बस उसे पहचानने की। भगवान यह अन्याय नही कर सकता की पुरुषों को सबल बनाए और स्त्री को दुर्बल बनाए। ये भेद-भाव तो केवल मनुष्यो के दिमाग की उपज हैं।

हर स्त्री में कुछ न कुछ प्रतिभा छुपी होती है हमे केवल उसे पहचान कर निखारना होगा। आज के डिजिटल युग मे कई नए आयाम खुल गए हैं। जिससे हम घर बैठे ही हम अपनी काबिलियत पूरे संसार को दिखा सकते है। यू-ट्यूब के जरिये हम कुकिंग, पेंटिंग, सिलाई, कढ़ाई आदि में अपना कैरियर बना सकते है। ऑन-लाइन क्लास से हम ख़ुद कुछ नया सीख कर दुसरो को उसके बारे में ट्रेर्निंग देकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं।

स्त्री हर रूप में देवी का अवतरण है जब वह सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक की तमाम जिम्मेदारीयो का निर्वाह करती है तो वह अन्नपूर्णा है, जब वह हर महीने तनख्वाह में से छोटी छोटी रकम बचा कर जब वह घर, की और अपनों की हर जरूरत पूरी करती है तो साक्षात् लक्ष्मी का अवतात है, बुद्धि और

अपनी लेखनी से जब वह पूरी दुनिया में अपने अस्तित्व का परचमलहराती है तो वह साक्षात् सरस्वती का रुप ही तो हैं, ममतामयी माँ के रूप में जब अपनो की रक्षा और देखभाल के संकल्प लेती है तब वह माँ दुर्गा का रूप है, और जब अन्याय और दुराचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए रौद्र रूप धारण करती तो महाकाली बन जाती है।

स्त्री पर हो रहे अत्याचार के लिए केवल पुरुषों को दोषी ठहराना उचित नही। इस संसार मे ऐसा कोई नही जिसे दुखो का सामना न करना पड़े। परिस्थितिया सभी की विपरीत होती है सभी के जीवन मे चुनौतीयाँ आती हैं, महत्वपूर्ण यह होता है कि हम उन परिस्थितियों से निपटना कैसे है।

जहाँ तक आदर और सम्मान की बात है वह ऐसे ही नही मिलता, समाज में मान-सम्मान पाने के लिए हमे दूसरो को भी उतना ही सम्मान देना होगा जितना हम दूसरो से अपेक्षा करते है। सेवा की भावना हमेशा मनमें होनी चाहिए। हमे अपनी हर कमजोरी को अपनी ताकत बनानी चाहिए। स्त्री शक्ति को आंकना बहुत कठिन है, हम सक्षम है हमे आता है घर और काम के बीच ताल-मेल बिठाना। पति पत्नी जीवन रूपी गाड़ी केदो पहियों की तरह है जिनका साथ चलना आवश्यक है अगर एक पहिया डगमगाने लगे तो जीवन बिखर जाता है। स्त्री दिन-रात अपने परिवार की इच्छा, पसन्द, नापसन्द का पूरा ख्याल रखती है और बदले में वह परिवार का थोड़ा साथ और सम्मान चाहती हैं जो उसे जीवन की हर कठिन परिस्थितियों को सहने की प्रेरणा देता है स्त्री के प्रति

आदर, सत्कार तथा आस्था भाव से हमेशा उसका सहयोग और सम्मान करें। परिवार के सहयोग और सम्मान से ही सफल होगी स्त्री की सृजन, शक्ती और साधना।

नारी ही शक्ति है नर की,

नारी ही है शोभा घर की

जो उसे उचित सम्मान मिले,

घर मे खुशियों के फूल खिले।

मैं स्त्री हूँ.....

मैं भी चाहती हूँ उडना

चाहती हूँ दुनिया देखना

नही चाहती रहना कैद

काटोना यू पंखमेरे

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ....

मैं जानती हूँ अपनी सीमाएं

बस जरा अपने हिस्से का

आसमान देखना चाहती हूं

करो न हौसला कम मेरा

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ...

मैं सक्षम हूँ ,जानती हूँ अपनी सीमाएं

यकीन है मुझे अपनी उड़ान पर

लौटूंगी अपने ही घोसले में

सचकरो तुम मेरा विश्वास

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ...

मैं सृजनकर्ता हूँ अपने परिवार की

सृजन करती हूँ अपने अंश का

अपने ही आत्मबल का

अपने अस्तित्व का, अपने आस्था का

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ...

क्यूमान लू मैं खुद को अबला

मै जानती हूँ विधाता ने दिया

स्त्री को सृजन करने का दायित्व

करती हूँ यकीन खुद पर

मुझे गर्वहैं मैं स्त्री हूँ...

तोड़ने की कोशिश जितना करते

मैं उतनी ही मजबूत हूँबनती

जितना मुझे है नकारा जमाने ने

उतना ही मैंने खुदको हैं पहचाना

मुझे गर्वहैं मैं स्त्री हूँ....

दिखावे की दुनिया से दूर मैं

निर्वाह करती अपने संस्कार का

कुछ करू कि मिशॉल बनू

गर्व करेमुझ पर अंश मेरा

मुझे गर्वहैं मैं स्त्री हूँ...

पूजा दीपक राठौड़
चेन्नई

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

पूजा दीपक राठौड़
चेन्नई

मैं स्त्री हूँ...!

मैं स्त्री हूँ...
मैं भी चाहती हूँ उडना
चाहती हूँ दुनिया देखना
नही चाहती रहना कैद
काटोना यू पंख मेरे
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ ...
मैं जानती हूँ अपनी सीमाएं
बस जरा अपने हिस्से का
आसमान देखना चाहती हूँ
करो न हौसला कम मेरा
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ ...
मैं सक्षम हूँ,जानती हूँ अपनी सीमाएं
यकीन है मुझे अपनी उड़ान पर
लौटूंगी अपने ही घोसले में
सचकरो तुम मेरा विश्वास
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ ...
मैं सृजनकर्ता हूँ अपने परिवार की
सृजन करती हूँ अपने अंश का
अपने ही आत्मबल का
अपने अस्तित्व का, अपने आस्था का
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ ...
क्यू मान लू मैं खुद को अबला
मै जानती हूँ विधाता ने दिया
स्त्री को सृजन करने का दायित्व
करती हूँ यकीन खुद पर
मुझे गर्व हैं मैं स्त्री हूँ ...
तोड़ने की कोशिश जितना करते
मैं उतनी ही मजबूत हूँ बनती
जितना मुझे है नकारा जमाने ने
उतना ही मैंने खुदको हैं पहचाना
मुझे गर्व हैं मैं स्त्री हूँ ...
दिखावे की दुनिया से दूर मैं
निर्वाह करती अपने संस्कार का
कुछ करुं कि मिशाल बनूं
गर्व करे मुझ पर अंश मेरा
मुझे गर्व हैं मैं स्त्री हूँ ...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/-
978-93-90995-13-4